



This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website  
<https://kksu.co.in/>

Digitization was executed by NMM

<https://www.namami.gov.in/>

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi  
Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade  
Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi  
<https://egangotri.wordpress.com/>







M-501

कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत  
विश्वविद्यालय ग्रंथालय, रामटेक

हस्तलिखित संग्रह

दाखल क्र. M 501 विषय स्मृति  
नांव- श्रीनरेश्वर स्मृति (स्मृति) M 55  
लेखक/लिपीकार .....  
पृष्ठ... 2 ...  
काळ ..... पूर्ण/अपूर्ण .....

105-W







श्रीगणेशाय नमः॥ अथ शनैश्वरस्तुतिः॥ नारद उवाच॥ ततः कृतं  
लिभूत्वास्तुतिं चक्रे सबालकः॥ पिप्पलादो द्विजः श्रेष्ठो प्रणिपत्य मु  
हुर्मुहुः॥ १॥ नमस्ते कोण संस्थाय पिंगलाय नमोस्तुते॥ नमस्ते  
बभ्रुरुपाय कृष्णाय च नमोस्तुते॥ २॥ नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते  
चांतकाय च॥ नमस्ते यम संस्थाय नमस्ते सौरजा विभो॥ ३॥  
नमस्ते यम संज्ञाय शनैश्वर नमोस्तुते॥ प्रसादं कुरु देवेश दी  
नस्य प्रणतस्य च॥ ४॥ शनैश्वर उवाच॥ परितुष्टोऽस्मि ते वत्स सोऽत्रै  
णानेन सांप्रतं॥ वरं वरय भो वत्स येन यच्छामि वांछितं॥ ५॥ पिप्प



श० स्तु

॥१॥

लादउवाच॥ अद्यप्रभृतिनोपीडाबालानांरवितंदन॥ त्वयाकार्या  
महाभागनस्यकीयाकथंचन॥ ६॥ यावदृषाष्टकंजातंसमवा  
क्येनसूर्यज॥ स्तोत्रेणानेनयोन्येस्त्वाश्रयात्मानरूपस्थितः॥ ७॥  
तस्यपीडानकर्तव्यात्वयाभास्करनंदन॥ साधाष्टकमियायो  
गेतावकेसंस्थितेनरः॥ ८॥ तववारेतुसंप्राप्तेसतिलंलोह  
संयुतान्॥ भक्त्याददातिनोतस्यपीडाकार्यात्वयाविभो॥ ९॥ कं  
छांगांयस्तुविप्रायतेवोदृशेनयच्छति॥ अर्धाष्टकमिकया  
पीडात्वयाकार्यानवेसदा॥ १०॥ शमीसमिद्रियोहोमंतवो  
दृशेनवर्तयेत्॥ तथाकुछतिलैश्चैवंकुछपुष्पानुलेपनेः॥ ११॥

॥१॥



प जां करोति यस्तु भ्यं धूपं वैगुण्युलं दहेत् ॥ कृष्ण वस्त्रेण संवे  
 ष्ण सा ज्यात स्य त्वया व्यथा ॥ १२ ॥ सूत उवाच ॥ एवमुक्तः श  
 निस्तेन बाढमित्येव जल्पन् ॥ नारदं समनुज्ञाय जगाम निज  
 संश्रयं ॥ १३ ॥ इति शांति सारे शनैश्वरस्तुतिः समाप्ता ॥ श्रीश  
 नैश्वरार्पणमस्तु ॥ श्रीसांवार्पणमस्तु ॥ ॥ ॥ ॥  
 सार्धं समनर्षपर्यंतं द्वादश जन्म द्वितीय राशिभिर्यः शनैश्वरयोगः सा  
 र्धाष्टमिका ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥



[OrderDescription]  
,CREATED=14.11.19 10:36  
,TRANSFERRED=2019/11/14 at 10:39:12  
,PAGES=6  
,TYPE=STD  
,NAME=S0002091  
,Book Name=M-501-SHANAISHCHAR STROT  
,ORDER\_TEXT=  
,[PAGELIST]  
,FILE1=00000001.TIF  
,FILE2=00000002.TIF  
,FILE3=00000003.TIF  
,FILE4=00000004.TIF  
,FILE5=00000005.TIF



FILE6=00000006.TIF

,